बैशाखी पूर्णिमा-महात्म्य

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

बैशाखी पूर्णिमा तिथि भारतवर्ष इतिहास में एक चिरस्मरणीय तिथि हैं। यह पुण्य दिवस तीन कारणो से प्रसिद्ध है। इस तिथि में ही महामानव सिद्धार्थ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था, इस तिथि में ही उनको सम्बोधि लाभ हुआ था एवं इसी तिथि में वे परिनिर्वाण को प्राप्त हुए थे।

इक्ष्वाकु वंश के शाक्यकुलतिलक भगवान बुद्ध महर्षि कपिल के तपस्यापुत पूण्य-देश कपिलवस्तु नगर में आविर्भूत हुए थे। उनके पिता का नाम शुद्धोधन एवं माता का नाम मायादेवी था। उनमें जन्म काल से ही अलौकिक भगवत् शक्ति का प्रकाश परिलक्षित होता है एवं वे अयोनि-सम्भवा थे। मानव सभ्यता के युगयुगान्तर के इतिहास में ऐसे महिमामंडित नि:दर्शन और नहीं देखे जाते हैं। भारत की श्रेष्ठ साधना, विश्वजनहितव्रत, परम सत्यानुसन्धानी शाश्वत आध्यात्मिक आदर्श के दिव्योज्ज्वल प्रतीक हैं ''भगवान बुद्ध''। बुद्ध का धर्म कल्याण का धर्म है, बुद्ध का दर्शन हृदय का दर्शन है एवं बुद्ध की परावाणी नवजीवन की आलोकमय वाणी है; सत्य, शान्ति एवं मैत्री से स्पन्दित ये परामृत-वाणी कोई देश या सम्प्रदाय से आबद्ध नहीं थी; अपितु विश्व-व्यापी प्रतिध्वनित हुई थी उनकी यह अमृतवाणी।

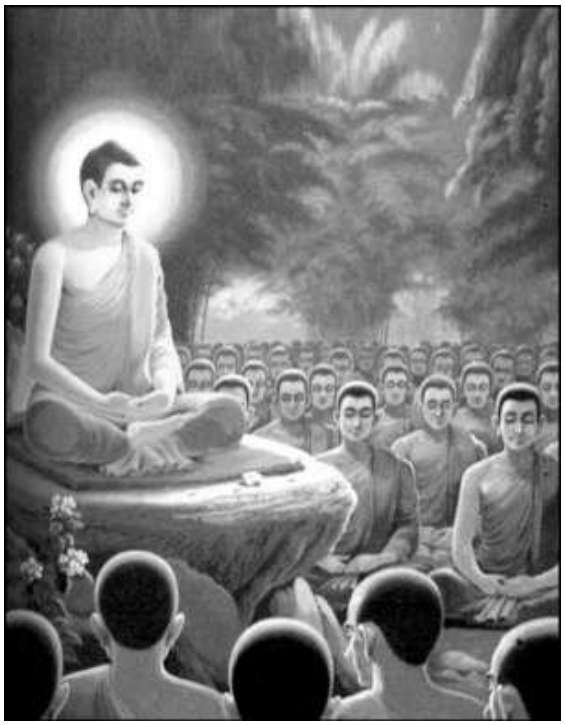

कई बुद्ध को शाश्वत दस अवतारों के मध्य नवम् अवतार कहते हैं, फिर कई उनको मानव शिक्षक भी कहते हैं, तो कई उन्हें निर्वाण के मंत्रदाता भी कहते हैं। बौद्ध शास्त्र में भगवान बुद्ध के अगणित शिष्य मंडली के मध्य जिन ८० महाश्रावकों का परिचय मिलता है वे सभी बुद्ध प्रदर्शित आर्य अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण कर आश्रव या वासना क्षय करके ''अर्हत'' पद लाभ कर-चुके थे। अर्थात्, भगवान बुद्ध ने ८० पूर्ण परमहंसों को जगत् को दान किया था।

भगवान बुद्ध ने औपनिषदिक वेदान्त की चर्चा जातिवर्ण को भेदाभेदहीन भाव में जनसाधारण के मध्य प्रचार किया था। ''सुन्दरता का चिन्तन, सुन्दर संसर्ग, सुन्दरता का स्मरण, यही तो मानव जीवन का सर्वस्व है''-ऐसे सुन्दर शब्दों को चिरसुन्दरता के पूजारी भगवान बुद्ध ही कह सकते हैं।

बुद्ध का बाल्य काल व यौवन यथोचित सुख-स्वाच्छन्दय् के मध्य अतिवाहित हुआ। इतने भोग-विलास में रहने पर भी गौतम ने देखा, ''यह पृथ्वी एक आश्चर्य हैं। किसी के दु:ख में कोई दु:खी नहीं होता। मनुष्य के दु:ख में मनुष्य आँख से आँसु नहीं बहाते और संवेदना भी नहीं दिखाते।'' आश्चर्य !! तब किसलिए यह मनुष्यत्व? गौतम का भोगविमुख मन पिंजरे के पंछी की तरह मुक्ति का पथ ढूंढता रहा।

बुद्धदेव का सन्यास-तीव्र वैराग्य मंडित हैं। इस वैराग्य में जीवनबोध के प्रति अविचलित श्रद्धा, निष्काम प्रेम एवं करुणा है। अज्ञानता के अन्धकार से आच्छादित मोहान्ध मनुष्यों का दु:ख निवारण करना बुद्ध की साधना है। मनुष्यों को निर्मल आलोक के पथ पर, आत्म की महिमानुभूति के पथ पर एवं निर्वाण मुक्ति के पथ में ले जाना ही बुद्ध की अक्लान्त चेष्टा है। वैदिक आर्यऋषिकुल के प्रथानुयायी अष्टांग योगमार्ग की कठिन कठोर तपश्चर्या और साधना के सिद्धिरुप में प्रेम व मैत्री संचित हुए थे तथागत बुद्ध के मधुकोष में। तत्पश्चात् मधुमय होकर इस महामानव का विश्व की एक दिव्य विभूति रुप में प्रस्फुरण हुआ था। विवेक और वैराग्य मंडित, करुणा व मधुरता से स्निग्ध था इस दिव्य विभूति का दिव्यैश्वर्य। सुदीर्घकाल एक आसन पर साधना करने से उनकी देह अस्थिचर्म सार हो गयी थी, फिर भी उनके ध्यान का विराम न था एवं सत्य को ज्ञान करने के लिए दृढ़ संकल्प की सामान्यतम शिथिलता भी नहीं थी। परन्तु क्रमश: वे उपलब्धि करते हैं कि दैहिक कष्ट वहन

करके बुद्धत्व या निर्वाण अर्जन करना असम्भव है। इसीलिए उन्होंने तब भिक्षान्न भक्षण करते हुए कठिन कठोर तपश्चर्या में मनोनिवेश किया। उरुविल्व (गया) नामक स्थान के निकटस्थ गहन जंगल में एक विशाल अश्वत्थ वृक्षमूल में निमृत तपस्या करने के लिए उन्होंने बोधि लाभार्थ दृढ़संकल्प लेकर अजेय आसन पर उपवेशन किया। फिर से शुरु हुई सिद्धार्थ की कठोर ध्यान तपस्या। अब आरम्भ हुआ ''मार'' का अत्याचार। विभिन्न प्रकार से ''मार'' ने साधना में विघ्न डालने की चेष्टा की मगर सर्वप्रकारेण अवस्था में वह परास्त हुआ। अन्तिम में सत्यार्थी सिद्धार्थ बुद्ध ने जयलाभ किया।

बैशाख की उज्ज्वल पूर्णिमा-रात्रि का प्रथम प्रहर। ''मार'' के सहस्त्र प्रलोभनों को अग्राह्य कर सिद्धार्थ अटलरुप में वज्रासन में ध्यानमग्न रहे, ठीक जैसे एक निष्कम्प प्रदीप की अविचल शिखा। अवशेष में ध्यानयोग द्वारा मन व बुद्धि के प्रबल संग्राम में गौतम ने विजयलाभ की। पूर्णज्ञान का विपुल वैभव उनको करायत्त (प्राप्त) हुआ। निर्मल आकाश की तरह ज्ञान के शुभ्र आलोक से उनका चित्त आलोकित हो उठा। आकंठ अमृत-पान कर वे मृत्यु-सागर को पार हुऐ। यामिनी के प्रथम याम में उनके मध्य दिव्य ज्ञान का स्फुरण हुआ। तदुपरान्त उनका मन क्रमशः ध्यान के स्तर भेद करते हुए सुख-दुःख की अतीत स्मृति परिशुद्ध चतुर्थ स्तर पर उपनीत हुआ। इसके पश्चात्त वे समाहित एवं समाधिस्थ हो गये। इस अवस्था में पूर्व जन्म की सारी स्मृतियाँ उनके मानस पट पर उद्भासित हुई। इसके बाद द्वितीय याम शुरु हुआ। अब सिद्धार्थ को आयत्त हुआ च्युतोत्पत्ति ज्ञान। इस ज्ञान के आलोक से उन्हें जन्म-मृत्यु के आदि रहस्य एवं काल-रहस्य ज्ञान हुए। तत्पश्चात् आया तृतीय याम। इस समय वे ध्यानकोविद् गण के श्रेष्ठ उस बोधिसत्व जगत् के स्वरुप को ध्यान करने लगे। जीव के त्रिताप ज्वाला से जर्जरित जीवन में अज्ञानता के अन्धकार में आवृत जीवों के निदारुण कोषदायक अवस्था में जीवित रहने के अदम्य प्रयास की प्रतिच्छवि तभी सिद्धार्थ के चित्त मध्य उद्भासित हुई। उन्हें ध्यान मध्य ज्ञान हुआ-जीव की उत्पत्ति का कारण एवं जन्म निरोध का उपाय।

तदनन्तर, जो ज्ञान होना था वह उन्हें सम्यक रुप से ज्ञान हुआ। अब सिद्धार्थ बुद्ध ने ध्रुवपद लाभ किया। इसके बाद ही रात्रि का चतुर्थ याम आ गया। ध्यान गम्भीरता से सिद्धार्थ का अन्तर अचल एवं निष्पन्द हो गया। क्रमशः प्रतीत्य समुत्पाद की गंभीरता से चरम उपलब्धि प्राप्त कर उनका हृदय परिपूर्ण हो गया। इस दिव्य ज्ञान की प्रभा से उज्ज्वल हो उठा उनका समग्र अन्तराकाश स्थल। इस अवस्था में उपनीत हो कर बुद्ध ने कुछ क्षण बाह्य ज्ञानशुन्य होकर विभोर भाव में बिताए। इस विशुद्ध अवस्था को भाषा द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। इस स्थिति में भाषा मुक हो जाती है, चिन्तन का प्रवाह स्तब्ध हो जाता है एवं कल्पना सीमा में ही रहती है। इस मुक्त, बंधनहीन प्रहृष्ट, प्रसन्न पवित्रबोध की परम उपलब्धि से सिद्धार्थ के चित्त में स्फुरित हुआ निर्वाण का चरम सत्य-''अनुत्तरं योगकखेमं निव्वाणं अज्झगसं।'' इस स्थल से ही उनके ''गौतम'' जीवन का विलय हुआ और ''बुद्ध'' जीवन का विकास होने लगा। अब सिद्धार्थ हुए महापावन बुद्ध।

इसीलिए ही तो वे अद्वितीय जगज्ज्योतिः हैं। मनुष्यों को उन्होंने अपने धर्मजीवन के केन्द्रस्थल पर स्थापित कर जगत् में युक्ति सिद्ध मानवधर्म, प्रेम का त्यागधर्म एवं वीर्यवान महत् मनुष्यत्व के बोध का प्रचार किया। कर्म, ज्ञान व ध्यान योग से वे महाज्ञानी की चरम उपलब्धि ''निर्वाण'' को प्राप्त हुए थे। इस दुर्लभ अनुभूति को स्वार्थी आचार्यों की तरह बद्धमुष्ठि के मध्य आबद्ध कर रखने की चेष्टा उन्होंने नहीं की। उन्होंने निर्वाण-पथ के महामंत्र का सर्वसाधारण के मध्य वितरण कर दिया। इसमें ही है उनका महत्व एवं महामानवत्व।

जगत् में भगवान बुद्ध ही हैं प्रथम धर्मगुरु, जिन्होंने धर्मप्रचार एवं संघ गठन प्रथा आरम्भ की थी। वे कहते हैं-''प्रज्ञा के आलोक से मुक्तिपथ को पहचान लो।'' उन्होंने पुनः कहा कि-''जगत्-जय से आत्म-जय करने वाले बड़े हैं।'' प्रेमबोध जागृत कराने के लिए बुद्ध ने कहा-''सर्व जीव के प्रति प्रेम प्रीति, अहिंसा प्रदर्शन करने के समान और बड़ा धर्म कुछ नहीं है।'' मनुष्य को चिन्तन की स्वाधीनता दान करना ही बुद्ध का श्रेष्ठ दान है। विश्व मानव की मुक्ति के साथ स्वयं की मुक्ति को उन्होंने एक सूत्र में ग्रंथित किया था। इसलिए आज भी वे पृथ्वी पर सनातन धर्म के चिह्नस्वरुप हो कर विराजमान हैं। इसी कारण बुद्ध को भगवान के स्वरुप महावतार कहा जाता है। बुद्ध आत्मा की अभ्युदय चिह्नित इस आलोकमय तिथि ''बैशाखी पूर्णिमा'' में उनके चरणपद्म पर कोटि-कोटि प्रणाम समर्पित करता हूँ।

॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स ॥

नत्थि रागसमो अग्गि, नत्थि दोससमो कलि।
नत्थि मोह समं जालं, नत्थि तण्हा समा नदी ॥

अर्थात्- राग के समान आग नहीं, द्वेष के समान ग्रह नहीं,
मोह के समान जाल नहीं, तृष्णा के समान नदी नहीं ॥
(धम्मपद २०२)